Vol III Issue I Feb 2013
Impact Factor : 0.2105 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue.1,Feb. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

कबीर का नारी दर्शन ः पूजनीय नारियों के परिप्रेक्ष्य में

बिरोदेवी कृष्ण रमोत्रा

एच.के.इ.एस.ए.व्ही. पाटील
डिग्री कॉलेज़ आलंद

सारांश

नारी विषय पर साहित्य में विशेष रूप से काव्य प्रायः सभी कवियों ने लेखन किया है | उसमें नारी के सौंदर्य श्रृंगार प्रेम एवं मनोभाव विषयक लेखन तो पर्याप्त मात्रा में हुआ मिलता है | मानव के भाव तत्व में नारी का शाश्वत मधुर्यपूर्ण स्थान है | कबीर को तो इंसानी रिस्तों की गहरी पहचान थी | वे मानर्वहृदय जीवम समाज और अनुभवातीत की गहराई तक पहूँचने वाले एक सफल कलाकार थे | कबीर के बारे में प्रायः यही कहा जाता है कि वे नारी निंदक थे परन्तु उन्होंने सभी नारियों की निंदा नहीं की है | उन्होंने जहाँ नारी के कामिनी रूप की घोर निंदा की है वहाँ उसके कल्यानकारी स्वरूप की प्रशंसा भी की है | कबीर द्वारा नारी के पूजनीय एवं प्रशंसित रूप मुख्यतः तीन है ः

प्रस्तावना

1 . नारी का कुमारी रूप
2 . नारी का पत्नी रूप
3 . नारी का माता रूप
यहाँ नारी को इन्हीं रूपों का विवेचन प्रस्तुत है -

1 . नारी का कुमारी रूप

कबीर की साखियों में नारी के कुमारी स्वरूप का अल्प रूप में वर्णन किया है तथापि यह भी नारी के अन्य रूपों में एक मुख्य रूप है | नारी के कुमारी रूप को कबीर ने पवित्र एवं वंदनीय माना है | वे लिखते हैं ः

"जव लग पिउ परचा नहीं कन्या क्वॉरी जॉनि |
हथलेवा होंसे लिया मुसकल पड़ी पिछॉनी ||"[1]

इसका कारण यह है कि यह वह स्वरूप है जब वह न तो अपने यौवन से परिचित होती है और न अपने स्वामी से | इस अपरिचित स्वरूप का वर्णन करते हुए कबीर ने कहा है कि 'नारी को तब तक कन्या अथवा कुऑरी समझना चाहिए कि जब तक उसका प्रियतम से परिचय न हो |' उसे यह जानकारी न हो कि पति के प्रति पूर्ण आर्त्मसमर्पण करना होगा तो आगे चलकर उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पडेगा क्योंकि वह केवल उससे हार्वभाव और उपरी श्रृंगार पर रीझने वाला नहीं हैं | उसका प्रेम पूर्ण समर्पण से ही मिल सकता है | ठीका यही दशा जीव की होती है |

नारी जब तक कन्या अथवा कुऑरी होती है तब तक वह अपनी सखियों के साथ खेलती है | उसकी यह अवस्था श्रृंगार करने की नहीं होती है और यदि वह श्रृंगार करे तो भी वह उसे शोभा नहीं देता | इसीलिए उसे प्रिय प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा होती है और साथ ही डर भी लगता है |

कबीर ने कुमारी को परमात्मा से मिलनोत्कण्ठित निर्मल आत्मा का प्रतीक माना है जिसे अभी परमात्मा का बोध नहीं हुआ है | निर्मलता एवं बार्लसुलभ अपरिचय से युक्त कुमारी को कबीर ने श्रध्दा से स्मरण किया हैं |

2 . नारी का पत्नी रूप

कबीर ने नारी के पर्त्नीरूप का सर्वाधिक महत्व दिया है और पतिव्रता सती सुहागिन तथा विरहिणी के रूप में उसकी प्रशंसा एवं वंदना की है |

2 . 1 नारी का पतिव्रता स्वरूप

कबीर के युग में स्वैराचार (स्वेच्छाचारी) अत्याधिक था | उस युग में सुंदर राजकुमारी को प्राप्त करने के लिए एक राज दूसरे राजा से युध्द करता था | इस प्रकार के युध्दों में असंख्य लोग मारे जाते थे | समाज में भी अराजकता का बोलवाला था | दूसरे के जर जोरू और जमीन को अपहरण बलवान हथिया लेते थे | ऐसे समय में कबीर ने कामिनी की निंदा और पतिव्रता के प्रशंसा की जो नीति अपनायी वह सर्वथा देश एवं काल के अनुरूप ही कही जाएगी |
संत कबीर ने पतिव्रता की प्रशंसा में कहा है ः

Title : कबीर का नारी दर्शन ः पूजनीय नारियों के परिप्रेक्ष्य में
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850]बिरोदेवी कृष्ण रमोत्रा**yr:2013 vol:3 iss:1**

"पतिव्रता मैली भली काली कुचल करूप |
पतिव्रता के रूप पर वारौं कोटि सरूप |"[2]

कबीर ने 'पतिव्रता मैली भली' कहकर मलिन पतिव्रता को स्वच्छन्द व्यभिचारिणी से श्रेष्ठ बतलाया है और कहा है कि पतिव्रता यद्यपि अपने मुख से पति का नाम नहीं लेती तथापि हृदय में सदैव उसे याद करती है | वे यह भी कहते हैं कि कलियुग में पतिव्रता और साधु थोड़े हैं |

"कबीर प्रीतड़ी तो तुझ सौं बहु गुणियाले कंत |
जो हँसी बोलौं और सौं तों नील रँगाऊदंत |"[3]

कबीर के अनुसार जिस प्रकार एक पतिव्रता नारी अपने पति से कहती है कि हे सर्वगुणसम्पन्न कांत (प्रिय)! मेरा प्रेम केवल तुम से है मेरी दृष्टी में तुम से बढ़कर गुणवाला और कोई नहीं है | यदि मैं किसी और से हँस कर बोलूं अर्थात्किसी दूसरे को मैं थोड़ा सा भी अनुराग दिखाऊँ तो मेरे लिए धिक्कार की बात होगी | मेरे लिए आप ही सब कुछ हो | आप से बढ़कर कोई नहीं है |

"जो पै पतिव्रता है नारी कैसे हो रही सो पियहि विचारी |
तन मन जीवन सौंपि सरीरा ताहि सुहागिन कहे कवीर ||"[4]

जो नारी पर-पुरूष के प्रति आसक्ति न रखती हो जिसका भक्तिभाव पूर्ण स्वभाव हो वही कबीर को पूजनीय लगती है | ऐसी नारी की कबीर ने भूर्रिभूरि प्रशंसा की है | उसमे श्रेष्ठ सुलक्षणा नारी के प्रति स्थार्नस्थान पर भरपूर सम्मान दिखाई देती है |

"जैसे नारि यहे पिय आपन रहे विरस रस माती |
अम्तर बाके उठे मलोल विरह दहे तन छाती |"[5]

पतिव्रता की प्रशंसा करते हुए कबीर ने कहा है कि पतिव्रता अपने पति से हमेशा मृदु वाणी में बोलती है | उसके चरण दबाती है | मन में दगा या कुबुद्धि नहीं रखती ऽ रात्रि में सुंदर शैया बिछाती है | रति का चॅवर दुलाती है | सदा अपने पति में मग्न रहती है | अपने प्रियतम के संग दिल से मिला कर शयन करती है | कबीर ऐसी पतिव्रता नारी को धन्य कहते हैं जो सदैव अपने पति को चाहती है और उसी से अपनी लगन लगाती है उसी के विरह में सदा जलती है |

जो स्त्री एकनिष्ठ पतिव्रता रहती है जो पति का वचन नहीं टालती वह स्वयं तो तरती है किंतु दूसरों को भी तारती है | उस पतिव्रता के कारण उसका समग्र परिवार उध्दार का मार्ग प्राप्त कर लेता है |

यह केवल पति का ही भजन करती है और उस पर विश्वास भी करती है | वह भले ही अपने पति का नाम अपने मुख से नहीं लेती परंतु मन ही सदैव उसका स्मरण करती रहती है | पतिव्रता अपने पति में मग्न रहती है जबकि व्यभिचारिणी घर-घर उदास अवस्था में घूमर्तीपिरती है |

कबीर के अनुसार पतिव्रता नारी को तो अत्यंत प्रिय होती ही है वह समाज में भी आदर्रसम्मान की दृष्टी से देखी जाती है | अर्थात्जन मानस में भी उसका आदर होता है |

2.2 नारी का सुहागन रूप

विवाहित के दो रूप होते हैं ः एक तो सुहागन और दूसरा दुहागन (क्रमशः सौभाग्यवती एवं असौ भाग्यवती) जिसको पति का सुस्ख प्राप्त होता है; वह सुहागन कहलाती है और जिसे पति का सानिध्य या सुख प्राप्त नहीं होता अर्थात्जो परित्यक्ता या विधवा हो वह दुहागन की सज्ञा से अभिहित होती है |

सुहागन नारी की कबीर ने मुक्त कण्ठ सेप्रशंसा की है | इसका कारण यह है कि वह इस संसार की उपेक्षा करके अपने पति में तर्नमन से अनुरक्त रहती है | सुहागन इसलिए भी वंदनीय है क्योंकि वह पीहर का मोह छोड़कर अपने पिया के देश में बसती है |

कबीर का अनुसार जो सुंदरी सुहागन अपने पति की सेवा में रत रहती है और अन्य पुरूष की इच्छा भी नहीं करती उसका पति उसे नहीं छोड़ता | वह एक क्षण के लिए भी उससे अलग नहीं होता | ठीक उसी प्रकार जो जीवात्मा अन्य देवींदेवताओं की आशा छोड़कर प्रभु की हृदय से भक्ति करता है उसके प्रभु अपना मधुर सान्निध्य प्रदान करता है | एकात्मकता ही सुहागन की सबसे बड़ी विशेषता है | संतो ने सुहागन को सुरति का प्रतीका माना है | वही वास्तविक आनंद का अनुभव कर सकती है |

कबीर के अनुसार जो तर्नमन से भरतार (पति) को भज़े वही सच्ची सुहागन है और भाव भक्ति प्रेम शील संतोष एवं समर्पण ही सुहागन की विशेषताएँ हैं | इसलिए एपष्ट है कि समाज के नियमन हेतु यह आवश्यक था कि नारियाँ सद्गुण और सुलक्षणों से सम्पन्न होकर अपना दाम्पर्त्यजीवन व्यतीत करें | संबवतः कबीर ने सुहागन की प्रशंसा की |

2.3 नारी का विरहिणी स्वरूप

विरर्हभावना प्रेम की उच्चतम अवस्था है | संयोग स्थूल होता है वियोग सूक्ष्म | संयोग शांत होता है और वियोग अनंत | इसीलिए वियोग तथा वियोगी सामाजिकों की सहानुभूति एवं श्रध्दा का कारण बनते हैं |

विरहिणी नारी नमनीय है स्तुत्य है और वंदनीय है क्योंकि वह विरह की अग्नि में जलती है | इसीलिए वह परमात्मा से मिलनातुर आत्मा का प्रतीक है | संभवतः यही कारण है कि कबीर ने मुर्क्तकण्ठ से विरहिणी की प्रशंसा की है | जैसे -

"रात्यूं रूनी बिरहनीं ज्यू बंचौ कूं कुंज |
कबीर अंतर प्रजल्या प्रगटया बिरहा पुंज ||"[6]

स्कबीर ने इस साखी में जीव की उपमा विरहिणी से दी गई है | विरहिणी अपने प्रिय के वियोग में रात भर उसी प्रकार रोती रहील जैसे क्रौंच पक्षी अपने बच्चों के वियोग में रोता रहता है | कबीर कहते हैं कि बिरह रूपी अग्नि पुंज अपने भीतर भभक उठा अर्थात्विरह वेदना जग गई |

कबीर कहते हैं कि विरहिणी नारी अपने पति से बिछुड़ने पर वैचैन हो जाती हैल न उसे दिन में चैन है न रात में | उसे स्वप्न में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता | उसे न धूप अच्छी लगती और न छाया | विरहिणी अपने पति से बिछुडकर इधर्रउधर सुख के लिए भटकती है | परंतु उसे सुख मिलता नहीं | वह जिसे सुख समझते है वह भी

दुख में परिणत हो जाता है ऽ उसे वास्तविक सुख अपने प्रियतम से मिलने पर ही मिलता है |

"अंदेसड़ा न भाजिसी संदेसौं कहियां |
कै हरि आयां भाजिसी कै हरि ही पासि गयां |"?

विरहिणी की आशंका चिंता और व्यथा केवल प्रिय का संदेश कहने से नहीं जा सकती | वह या तो प्रभु के आने से अथवा उस विरहिणी के प्रभु के पास जाने से ही जा सकती है अर्थात्विरहिणी का दुख केवल प्रर्भुमिलन से ही कम हो सकता है बातों से नहीं |

कबीर के अनुसार विरहिणी की तालावेली एवं प्यास वंदनीय है | वह न तो अपना दुख किसी से कहती है और न ही किसी के द्वारा अपना संदेश भेजती है | वह तो बस अपने प्रियतम का पंथ निहारती रहती है | ऐसी ही सन्निष्ठता धन्य है |

विरहिणी प्रतिपल कांत की कामना करती है | अतः उसके जीव के प्रबल तालाबेली लगी रहती है | इसी को विरहिणी का भाव कहा जाता सकता है | कांत की कामना में ही उसका अनमोल जीवन व्यतीत हो जाता है | विरहिणी के भाव से ही कबीर अपने परमात्मा का स्मरण करते हैं |

2.4 नारी का सती रूप

मध्यकाल में नारी की स्थिती बड़ी ही खराब थी | कन्या के रूप में वह असुरक्षा के भय से ग्रस्त रहती थी | भायी के रूप में उसे अपहरण का भय बना रहता था | वैधव्य प्राप्त होने पर उसे समाज से तिरस्कृत होना पड़ता था | उन दिनों पति की मृत्यु पर पति के शव के साथ स्वेच्छापूर्वक अग्निप्रवेश को नार्रीजीवन का उच्चतम आदर्श माना जाता था | सामाजिक परिस्थितियों को सुधारने और उसमें नारी के उबारने का उन्हें एक ही मार्ग सूझा कि नारी को पातिव्रत्य के लिए प्रेरित किया जाया | उसे एकनिष्ठता का उपदेश दिया जाय और सती होने के लिए प्रेरित किया जाया |

कबीर ने सती की सर्वाधीक प्रशंसा की है | कबीर ने उस सती को धन्य माना है जो आग से नहीं डरती अपितु प्रसन्नतापूर्वक वह जलती चिंता पर बैठ जाती है | वह स्वयं स्फुरित प्रेरणा से सर्ता होती है | वह अपने मरत पति के ध्यान में अपने स्नेहियों को त्याग देती है |

"सर्ता जिलन कूं नीकली चित धरि एकबमेख |
तन मन सौंप्या पीव कूं तब अंतर रही न रेख |"[8]

कबीर के अनुसार जीवात्मारूपी सती चित्त में एक अनुपम लालसा लेकर जलने के लिए निकली | उसने अपना तर्नमन अपने प्रियतम को सौंप दिया तब दोनों के मध्ये कोई विभाजक रेखा नहीं रह गयी अर्थात्दोनों एक हो गए | कबीर ने जितनी कामिनी की निंदा की उससे कई अधिक सर्ता नारी की प्रशंसा की है | सम्भवतः इन संतों के द्वारा अनुमोदित होने के कारण ही भारत में सर्ताप्रथा का इतना प्रचार हुआ था | यदि राज राममोहन राय कनून बनाकर इस प्रथा का अंत न कर देते तो आज भी गॉर्वगॉव अऔर घर्घर में नारी सती के रूप में आर्त्मविलोपन करती दृष्टीगत होती |

3. नारी का माता रूप

माता के रूप में नारी सदैव समादृत रही है | वह जननी है जन्म देने वाली है उसकी जितनी भी स्तुति की जाय उतनी थोड़ी ही है | कबीर को प्रायः नारी निंदक ही माना जाता रहा है परन्तु यह नारी के मार्तृरूप के परम प्रशंसक थे |

कबीर ने यद्यपि नारी के कामिनी रूप की निंदा की तथापि वे उसके मार्तृरूप के प्रशंसक थे |

"कबीर धनि ते सुंदरी जिनि जाया बैसनौं पूत
राम सुमरि निरभै हुवा सब जग गया अउत |"[9]

कबीर कहते है कि वह स्त्री धान्य है जिसने हरि भक्त पुत्र को जन्म दिया है | वह राम के नाम का स्मरण करके निर्भय हो जाता है | इसके अतिरिक्त सारे संसार को निस्संतान ही समझना चाहिए | अर्थात्जो मनुष्य हरि का भजन करता है अपना ध्यान भगवान के चरणों में लगाता है कबीर उस मनुष्य की मॉं को धन्य कहते हैं | इसके अतिरिक्त जो भगवान का नाम नहीं लेते हैं वे निस्संतान हैं |

"कबीर कुल सोई भला जिहि कुल उपजे दासा |
जिनि कुल दास न उपज़ै सो कुल आक पलास |"[10]

कबीर कहते है कि जिस कुल में प्रर्भुभक्त जन्म ले वही कुल सर्वोतम है | जिस कुल में कोई में कोई प्रर्भुभक्त उत्पन्न न हो वह मदार और ढाक के समान निस्सार है |
संत दरिया साहब ने भी नारी के मार्तृरूप की प्रशंसा की है | उनके अनुसार नारी जगर्तजननी है वह जगत को ह्यलोगों कोह् पार्लपोसकर बड़ा करती है |
वस्तुतः नारी का मार्तृरूप वंदनीय है | सभी संतों ने नारी के जननी रूप को नमन किया है | नारी का यह रूप निर्विवाद रूप से स्तुत्य है वन्दनीय है |

निष्कर्ष :-

कबीर मानर्वमन के भी बड़े पारखी थे | वे मानव हृदय जीवन समाज और अनुभवातीत की गहराई तक पहुॅंचने वाले एक सफल कलाकार थे | कबीर के द्वारा नारी के पूजनीय एवं प्रशंसित रूप मुख्यतः तीन हैं **(1)** कुमारी; **(2)** पत्नी और **(3)** माता |

कबीर ने कुमारी रूप को परमात्मा से मिलनोत्कष्ठित निर्मल आत्मा का प्रतीक माना है जिसे अभी परमात्मा का बोध नहीं हुआ है | निर्मलता एवं बाल सुलभ अपरिचय से युक्त कुमारी को कबीर ने श्रध्दा से स्मरण किया है |

कबीर ने नारी के पर्त्नीरूप को सर्वाधिक महत्व दिया है और पतिव्रता सुहानगन विरहिणी तथा सती के त्प में उसकी स्तुति एवं वंदना की है | कबीर के अनुसार

पतिव्रता हमेशा अपने पति से मृदुवाणी में बोलती है | मन में दगा या कुबुध्दि नहीं रखती | वह सदैव अपने पति को चहती है और उसी में उास्की लगन होती है | उसी केविरह में वह सदा जलती है | जो स्त्री एकन्अिष्ठ पतिव्रता रहती है उस पतिव्रता के सहारे उसका समग्र परिवार उध्दार का मार्ग प्राप्त कर लेता है |

सुहागन नारी की कबीर ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है | इसका कारण यह है कि इस संसार की उपेक्षा करके अपने पति में तर्नमन से अनुरक्त रहती है | वह पीहर का मोह छोड़कर अपने पिया के देश में रहती है | कबीर के अनुसार विरहिणी वंदनीय है क्योंकि वह विरह की अग्नि में जलती है | इसलिए वह परमात्मा से मिलनातुर आत्मा का प्रतीक है | इसीलिए उन्होंने मुर्क्तकण्ठ से विरहिणी की प्रशंसा की है |

कबीर ने उस सती को धन्य माना है जो आग से नहीं डरती अपितु प्रसन्नतापूर्वक वह जलती चिंता पर बैठ जाती है | वह स्वयं स्फुरित प्रेरणा से सती होती है | वह अपने मरत पति के ध्यान में अपने स्नेहियों को त्याग देता है | कबीर ने नारी के माता रूप की वंदना की है | उनके अनुसार वह स्त्री धन्य है जिसने हरि भक्त को जन्म दिया | वह राम के नाम का स्मरण करके निर्भय हो जाता है | साधु पूत्र का जन्म देनेवाली सुंदरी माता को कबीर ने धन्य कहा है |

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 . सं . श्यामसुंदरदास - कबीर ग्रंथावली; पृष्ठ - **37**
2 . डॉ . वल्लभदास तिवारी - हिंदी काव्य में नारी; पृष्ठ - **235**
3 . सं . श्यामसुंदरदास - कबीर ग्रंथावली; पृष्ठ - **14**
4 . डॉ . ब्रजभूषण शर्मा - कबीर्रचिंतन; पृष्ठ - **133**
5 . कबीर साहब की शब्दावली - भाग-**3**; पृष्ठ - **23**
6 . सं . श्यामसुंदरदास - कबीर ग्रंथावली; पृष्ठ - **37**
7 . वही - " ;पृष्ठ - **6**
8 . वही - " ;पृष्ठ - **56**
9 . वही - " ;पृष्ठ - **41**
10 . वही - " ;पृष्ठ - **41**

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net